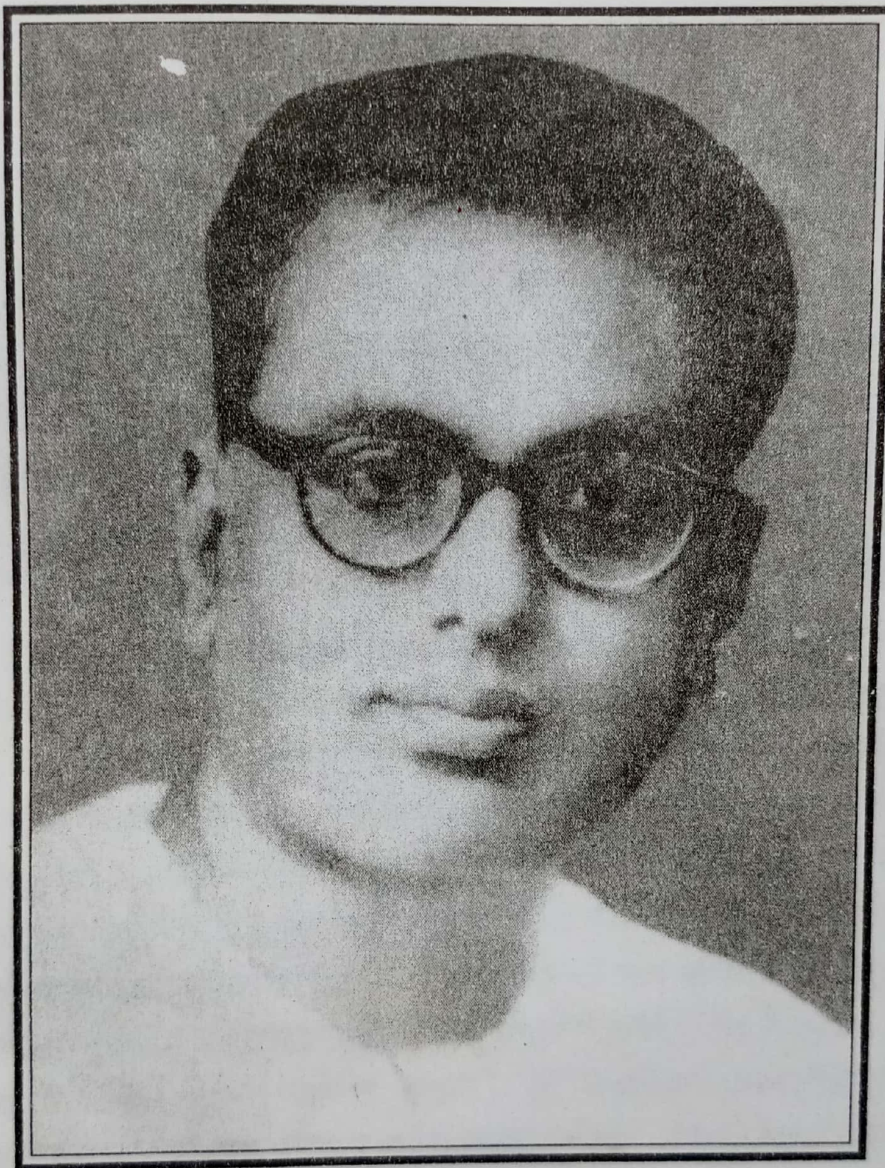
व्यंग्यसम्राट प्रो. हरिमोहनझा



18 सितम्बर 2008

मिथिला रिसर्च सोसाइटी

कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001

शंकरदेवझा

व्यंग्य सम्राट प्रो. हरिमोहनझा

प्रस्तावना

कवीश्वर चन्दाझा मैथिली नवजागरणक दीप जरा 1907 मे एहि संसारसँ प्रस्थान कऽ गेलाह । तत्पश्चात् हुनक अभियानकेँ म.म.मुरलीधरझा मिथिला मोदक माध्यमे विस्तार देलनि । अठारहम -उनैसम शताब्दीमे बाहरी ओ भितरी दुनू प्रकारक आघातसँ मरकमान भेलि मैथिली भाषामे नवजीवनक संचार तँ भऽ गेल रहैक, मुदा एहि भाषाकेँ स्वस्थ होयबाकलेल विशेष चिकित्साक प्रयोजन छलैक । एहि भाषाकेँ अन्य भारतीय भाषाक समकक्ष नहि तँ कमसँ कम ओकरा पाछाँ-पाछाँ चला सकबाक हेतु पुष्टिकारक औषधि देबाक आवश्यकता छलैक । मैथिली साहित्यकेँ नव दृष्टि, नव बोध, नव अर्थ देबाक प्रयोजनक अनुभव कयल जाय लागल छलैक। एहि ऐतिहासिक कार्यक शुभारम्भ ककरा हाथेँ भऽ सकत तकर व्यग्रतासँ प्रतीक्षा कयल जाय लागल छलैक ।

जन्म ओ बाल्यावस्था

आकुलताक एही समयमे 18 सितम्बर 1908 इ. केँ जीतिया पावनिक प्रात आश्विन कृष्ण अष्टमीकेँ मिथिलाक ऐतिहासिक वैशाली क्षेत्रक कुमर बाजितपुर गामक निवासी मैथिलीक निविष्ट साहित्यकार पं. जनार्दनझा जनसीदनक घरमे एकटा पुत्रक जन्म भेलनि । दूटा कन्याक बाद एहि पुत्र रत्नक प्राप्तिसँ घरमे हर्षक लहरि दौड़ि गेल । माय जननीदेवी सन्तानवती तँ छलीहे आब पुत्रवती होयबाक सौभाग्य सेहो हुनका प्राप्त भेलनि । बच्चाक नाम राखल गेल - हरिमोहन । हरिमोहनक जन्म बड़ देवे-सेवे, कबुला-पातीसँ भेल छलनि तेँ ओ भरि घरमे सभक दुलारू छलाह । पितामही आ माय तँ कखनो आँखिसँ अऽढ़े ने होअऽ देथिन । पिता जनसीदन संस्कृत, ज्योतिष आयुर्वेद आदि कतोक शास्त्रक निविष्ट विद्वान तँ रहबे करथिन मैथिली, संस्कृत आ हिन्दीक सुप्रसिद्ध रचनाकार सेहो रहथिन, बंगलासँ हिन्दी-मैथिली भाषामे अनुवाद करबामे से फराके महारत हासिल छलनि । पं. जनसीदन भ्रमणशील छलाह । जीवनयापनक हेतु हुनका सदिखन कोनो राजा-रजबाड़ा, गाम-गमाइत जाय पड़ैत छलनि । ओ अपन पुत्र बालक हरिमोहनकेँ बेसी काल अपना संगे राखल करथिन । पिताक सान्निध्य, देशाटनक अनुभव, रंग-विरंगक साहित्यिक जनसँ निरन्तर भेंट-घाँट आदिक कारणेँ बालक हरिमोहनक साहित्यिक संस्कार तखनहिसँ प्रस्फुटित होअऽ लगलनि । पिता बालक हरिमोहनकेँ जहिना अगणित संस्कृतक श्लोक सब रटबथिन तहिना व्याकरण आ काव्यशास्त्रक विषय सब बुझाओल करथिन । हरिमोहनक काव्य प्रतिभा, मैथिली, हिन्दी ओ संस्कृतमे तुकबन्दी तथा समस्यापूर्त्ति करबाक हुनक प्रवृत्ति देखि-देखि विद्वान लोकनि चकित भऽ उठथि ।

1919 मे जनसीदनजी **मिथिला मिहिरक** सम्पादक नियुक्त कयल गेलाह । एगारह वर्षक हरिमोहन अपन पिताक संग लागल रहबाक हेतु दरभंगा अयलाह । दरभंगाक परिवेश बालक हरिमोहनक साहित्यिक प्रतिभाकेँ विकसित होयबाक अवसर प्रदान कयलक । दरभंगामे हरिमोहन अपन पिताक संग जखन मिहिरक प्रेस जाथि तँ ओतऽ नाना प्रकारक पत्र-पत्रिका ओ बंगला, मैथिली, हिन्दीक प्रसिद्ध साहित्यकार लोकनिक कृत्ति पढ़बाक अवसर भेटनि। 1919 सँ लऽ कऽ 1922 धरि दरभंगा निवासक क्रममे किशोर हरिमोहनक साहित्यिक संस्कार ततेक प्रबल होइत गेल जे एक दिन ओ कलम उठाय एक बैसारमे **अजीब बन्दर** शीर्षकसँ एकटा हास्य-व्यंग्यपूर्ण कथा लिखि लेलनि। दरभंगाक प्रसिद्ध साहित्यिक ओ सुदर्शन प्रेसक संचालक पं. जगदीश्वरीप्रसाद ओझाकेँ किशोर-कलमसँ निःसृत ओ गल्प ततेक पसिन्न पड़लनि जे ओ एकरा अपन प्रेससँ पुस्तकाकार छपबा देलथिन । ई पोथी हिनक प्रथम कृति भेल जकरा संग हरिमोहन साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि ।

शिक्षा-दीक्षा

हरिमोहनकेँ पितासँ विभिन्न शास्त्रक ज्ञान ओ अनुभव तँ प्राप्त भेल छलनि, मुदा तावत धरि हिनका व्यवस्थित स्कूली शिक्षा नहि भेटल छलनि । 1923 इ. मे जनसीदनजीक ममियौत उपेन्द्रनारायण कुमर जे जी.बी.बी. कालेजियट स्कूल मुजफ्फरपुरमे शिक्षक छलथिन ओ अपन भातिज हरिमोहनक प्रतिभासँ ततबा प्रभावित भेलाह जे हिनका अपना संग लेने मुजफ्फरपुर चल गेलथिन । ओतऽ विद्यालयक प्रधानाध्यापक हिनक धाराप्रवाह संस्कृत सूनि ततेक मुग्ध भेलथिन जे हिनका दशम् वर्गमे प्रवेश दऽ देलथिन । एहि तरहेँ प्रन्द्रह वर्षक अवस्थामे हरिमोहनक वास्तविक छात्र जीवन प्रारम्भ भेलनि ।

1925 मे हरिमोहन पटना विश्वविद्यालयसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि आ छात्रवृत्ति सेहो भेटलनि । मैट्रिकक बाद मुजफ्फरपुरहिक जी.बी.बी. कालेज (वर्त्तमानमे लंगटसिंह महाविद्यालय) मे नामांकन करौलनि आ संस्कृतक संग तर्कशास्त्र ओ इतिहास रखलनि । 1927 मे आइ.ए.क रिजल्ट बहरायल ताहिमे छात्र हरिमोहन सम्पूर्ण बिहार आ उड़ीसामे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ कऽ अपन पिताक संगहि मिथिलाक मस्तककेँ ऊँच कयलनि ।

आइ. ए. कयलाक बाद बी.ए. पढ़बाक हेतु हरिमोहन पटना चल गेलाह जतऽ पटना कालेजमे ई नाम लिखौलनि। अंग्रेजी विषयमे आनर्स रखलनि जखन कि दर्शनशास्त्र ओ संस्कृत हिनक अन्य विषय छलनि । पटनाक अपन छात्र जीवनमे हरिमोहन निरन्तर अपन योग्यताक परिचय दैत विभिन्न प्रतियोगिता ओ अन्य तरहक साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनमे भाग लैत रहलाह । हिनक प्रतिभासँ प्रभावित भऽ

हिनक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष तथा मिंटो होस्टलक वार्डेन आर्मर साहेब हिनका आल इंडिया डिवेट कंपिटीसनमे पटना विश्वविद्यालक प्रतिनिधि बना कऽ इलाहाबाद पठौलथिन । ओतऽ ई प्रतियोगितामे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति स्वनामधन्य डा. गंगानाथझासँ ट्राफी प्राप्त कऽ पटना घुरलाह । 1929 मे ई अंग्रेजी ऑनर्सक संग बी.ए.क परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि आ अपना गामक पहिल ग्रेजुएट होयबाक सौभाग्य हिनका प्राप्त भेलनि । गाम घुरलापर बाजितपुर स्कूलमे हिनक स्वागतमे समारोह आयोजित कयल गेल ।

बी.ए. कयलाक बाद किछु पारिवारिक विवशताक कारणेँ हरिमोहनकेँ एक वर्ष अपन अध्ययनकेँ स्थगित राखऽ पड़लनि । एहि एक वर्षक उपयोग ई अपन साहित्यिक प्रतिभाकेँ मँजबा-तरासबामे, ओकरा औरो विस्तृत ओ व्यापक बनयबामे कयलनि । मुदा 1930-32 सत्रमे ई दर्शनशास्त्र विषयसँ पटना विश्वविद्यालयसँ एम. ए. कयलनि जाहिमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि आ स्वर्ण पदकसँ विभूषित भेलाह ।

आजीविका

एम.ए.क उच्चतम शैक्षणिक योग्यता प्राप्त कयलाक बाद हरिमोहनकेँ आजीविकाकलेल बेसी दिन प्रतीक्षा नहि करऽ पड़लनि । जुलाइ 1933 इ. मे हिनक नियुक्ति बी.एन.कॉलेज पटनामे दर्शन शास्त्रक व्याख्याताक पदपर भऽ गेलनि । ततः पर प्रो. हरिमोहनझाक रूपमे जेना हिनक नव जन्म भेलनि से एहि कारणेँ जे ई अपन योग्यतासँ जहिना दर्शनशास्त्र सन कठिन विषयमे अपनाकेँ एकटा योग्य शिक्षक ओ अध्येताक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि तँ दर्शन शास्त्र विषयक अनेक ग्रन्थक योजनाबद्ध ढंगसँ आठ खण्डमे लेखन सुरू कयलनि, एहिमे दू खण्ड प्रकाशितो भेलनि । 1948 मे हिनक नियुक्ति पटना कालेजमे भेलनि । तकर बादसँ तँ ई दर्शनशास्त्रक क्षेत्रमे क्रमश: आगाँ बढ़ैत चल गेलाह । 1953 मे विभागाध्यक्ष बनलाक बाद तँ हिनक परिचित अखिल भारतीय स्तरपर व्याप्त भऽ गेल । इंडियन फिलासफिकल कांग्रेस तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषदसँ सम्बद्ध भऽ ई देश ओ विदेशमे अनेक बेर दर्शनशास्त्र विषयक आयोजन-अधिवेशनमे भाग लैत रहलाह । हिनक मार्गनिर्देशनमे अनेक व्यक्ति पी.एच.डी. कऽ कऽ डाक्टरेटक उपाधि प्राप्त कयलनि । सितम्बर 1970 मे विश्वविद्यालय सेवासँ ई अवकाश प्राप्त कयलनि, तकर बादो दर्शनशास्त्रपक अध्ययन-मनन ओ लेखनमे जीवनक अन्तिम समय धरि लागल रहलाह ।

घर-परिवार

प्रो. हरिमोहनझाक पूर्वज लोकनि ओना तँ कोइलख गामक वासी रहथिन मुदा कालान्तरमे अनेक कारणेँ हिनका लोकनिकेँ अपन गाम छोड़ि बिरसायरमे बसऽ

1919 मे जनसीदनजी **मिथिला मिहिरक** सम्पादक नियुक्त कयल गेलाह । एगारह वर्षक हरिमोहन अपन पिताक संग लागल रहबाक हेतु दरभंगा अयलाह । दरभंगाक परिवेश बालक हरिमोहनक साहित्यिक प्रतिभाकेँ विकसित होयबाक अवसर प्रदान कयलक । दरभंगामे हरिमोहन अपन पिताक संग जखन मिहिरक प्रेस जाथि तँ ओतऽ नाना प्रकारक पत्र-पत्रिका ओ बंगला, मैथिली, हिन्दीक प्रसिद्ध साहित्यकार लोकनिक कृत्ति पढ़बाक अवसर भेटनि। 1919 सँ लऽ कऽ 1922 धरि दरभंगा निवासक क्रममे किशोर हरिमोहनक साहित्यिक संस्कार ततेक प्रबल होइत गेल जे एक दिन ओ कलम उठाय एक बैसारमे **अजीब बन्दर** शीर्षकसँ एकटा हास्य-व्यंग्यपूर्ण कथा लिखि लेलनि। दरभंगाक प्रसिद्ध साहित्यिक ओ सुदर्शन प्रेसक संचालक पं. जगदीश्वरीप्रसाद ओझाकेँ किशोर-कलमसँ नि:सृत ओ गल्प ततेक पसिन्न पड़लनि जे ओ एकरा अपन प्रेससँ पुस्तकाकार छपबा देलथिन । ई पोथी हिनक प्रथम कृति भेल जकरा संग हरिमोहन साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कयलनि ।

शिक्षा-दीक्षा

हरिमोहनकेँ पितासँ विभिन्न शास्त्रक ज्ञान ओ अनुभव तँ प्राप्त भेल छलनि, मुदा तावत धरि हिनका व्यवस्थित स्कूली शिक्षा नहि भेटल छलनि । 1923 इ. मे जनसीदनजीक ममियौत उपेन्द्रनारायण कुमर जे जी.बी.बी. कालेजियट स्कूल मुजफ्फरपुरमे शिक्षक छलथिन ओ अपन भातिज हरिमोहनक प्रतिभासँ ततबा प्रभावित भेलाह जे हिनका अपना संग लेने मुजफ्फरपुर चल गेलथिन । ओतऽ विद्यालयक प्रधानाध्यापक हिनक धाराप्रवाह संस्कृत सूनि ततेक मुग्ध भेलथिन जे हिनका दशम् वर्गमे प्रवेश दऽ देलथिन । एहि तरहेँ पन्द्रह वर्षक अवस्थामे हरिमोहनक वास्तविक छात्र जीवन प्रारम्भ भेलनि ।

1925 मे हरिमोहन पटना विश्वविद्यालयसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि आ छात्रवृत्ति सेहो भेटलनि । मैट्रिकक बाद मुजफ्फरपुरहिक जी.बी.बी. कालेज (वर्त्तमानमे लंगटसिंह महाविद्यालय) मे नामांकन करौलनि आ संस्कृतक संग तर्कशास्त्र ओ इतिहास रखलनि । 1927 मे आइ.ए.क रिजल्ट बहरायल ताहिमे छात्र हरिमोहन सम्पूर्ण बिहार आ उड़ीसामे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ कऽ अपन पिताक संगहि मिथिलाक मस्तककेँ ऊँच कयलनि ।

आइ. ए. कयलाक बाद बी.ए. पढ़बाक हेतु हरिमोहन पटना चल गेलाह जतऽ पटना कालेजमे ई नाम लिखौलनि। अंग्रेजी विषयमे आनर्स रखलनि जखन कि दर्शनशास्त्र ओ संस्कृत हिनक अन्य विषय छलनि । पटनाक अपन छात्र जीवनमे हरिमोहन निरन्तर अपन योग्यताक परिचय दैत विभिन्न प्रतियोगिता ओ अन्य तरहक साहित्यिक-सांस्कृतिक आयोजनमे भाग लैत रहलाह । हिनक प्रतिभासँ प्रभावित भऽ

हिनक अंग्रेजी विभागाध्यक्ष तथा मिंटो होस्टलक वार्डेन आर्मर साहेब हिनका आल इंडिया डिवेट कंपिटीसनमे पटना विश्वविद्यालक प्रतिनिधि बना कऽ इलाहाबाद पठौलथिन । ओतऽ ई प्रतियोगितामे सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कऽ विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति स्वनामधन्य डा. गंगानाथझासँ ट्राफी प्राप्त कऽ पटना घुरलाह । 1929 मे ई अंग्रेजी ऑनर्सक संग बी.ए.क परीक्षा उत्तीर्ण कयलनि आ अपना गामक पहिल ग्रेजुएट होयबाक सौभाग्य हिनका प्राप्त भेलनि । गाम घुरलापर बाजितपुर स्कूलमे हिनक स्वागतमे समारोह आयोजित कयल गेल ।

बी.ए. कयलाक बाद किछु पारिवारिक विवशताक कारणेँ हरिमोहनकेँ एक वर्ष अपन अध्ययनकेँ स्थगित राखऽ पड़लनि । एहि एक वर्षक उपयोग ई अपन साहित्यिक प्रतिभाकेँ मँजबा-तरासबामे, ओकरा औरो विस्तृत ओ व्यापक बनयबामे कयलनि । मुदा 1930-32 सत्रमे ई दर्शनशास्त्र विषयसँ पटना विश्वविद्यालयसँ एम. ए. कयलनि जाहिमे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कयलनि आ स्वर्ण पदकसँ विभूषित भेलाह ।

आजीविका

एम.ए.क उच्चतम शैक्षणिक योग्यता प्राप्त कयलाक बाद हरिमोहनकेँ आजीविकाकलेल बेसी दिन प्रतीक्षा नहि करऽ पड़लनि । जुलाइ 1933 इ. मे हिनक नियुक्ति बी.एन.कॉलेज पटनामे दर्शन शास्त्रक व्याख्याताक पदपर भऽ गेलनि । ततः पर प्रो. हरिमोहनझाक रूपमे जेना हिनक नव जन्म भेलनि से एहि कारणेँ जे ई अपन योग्यतासँ जहिना दर्शनशास्त्र सन कठिन विषयमे अपनाकेँ एकटा योग्य शिक्षक ओ अध्येताक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि तँ दर्शन शास्त्र विषयक अनेक ग्रन्थक योजनाबद्ध ढंगसँ आठ खण्डमे लेखन सुरू कयलनि, एहिमे दू खण्ड प्रकाशितो भेलनि । 1948 मे हिनक नियुक्ति पटना कालेजमे भेलनि । तकर बादसँ तँ ई दर्शनशास्त्रक क्षेत्रमे क्रमशः आगाँ बढ़ैत चल गेलाह । 1953 मे विभागाध्यक्ष बनलाक बाद तँ हिनक परिचित अखिल भारतीय स्तरपर व्याप्त भऽ गेल । इंडियन फिलासफिकल कांग्रेस तथा अखिल भारतीय दर्शन परिषदसँ सम्बद्ध भऽ ई देश ओ विदेशमे अनेक बेर दर्शनशास्त्र विषयक आयोजन-अधिवेशनमे भाग लैत रहलाह । हिनक मार्गनिर्देशनमे अनेक व्यक्ति पी.एच.डी. कऽ कऽ डाक्टरेटक उपाधि प्राप्त कयलनि । सितम्बर 1970 मे विश्वविद्यालय सेवासँ ई अवकाश प्राप्त कयलनि, तकर बादो दर्शनशास्त्रपक अध्ययन-मनन ओ लेखनमे जीवनक अन्तिम समय धरि लागल रहलाह ।

घर-परिवार

प्रो. हरिमोहनझाक पूर्वज लोकनि ओना तँ कोइलख गामक वासी रहथिन मुदा कालान्तरमे अनेक कारणेँ हिनका लोकनिकेँ अपन गाम छोड़ि बिरसायरमे बसऽ

पड़लनि, पछाति ओतहुसँ उपटि कऽ अन्तत: ई लोकनि कुमर बाजितपुरमे आबि कऽ बसलाह । कुमर बाजितपुर प्रो. हरिमोहनझाक पिता पं. जनार्दनझा जनसीदनक मातृक छलनि । हुनक मातामह चन्द्रमणि कुमर मिथिलाक प्रसिद्ध ओइनिवार राजवंशसँ सम्बद्ध पैघ जमीन्दार छलथिन । स्व. रायबहादुर जयानन्द कुमर जनसीदनजीक ममियौत भाय छलथिन । हरिमोहनझाकेँ अपन पितृमातृकक विशाल परिवारक स्नेह ओ आशीर्वाद सब दिन भेटैत रहलनि । जनसीदनजीकेँ छओटा सन्तान भेलथिन - चारि पुत्री आ दूटा पुत्र । ताहिमे हरिमोहनक स्थान तेसर आ भायमे पहिल छलनि । हिनकासँ छोट हिनक भायक नाम इन्द्रमोहन छलथिन । पिता-माता ओ नानी-नाना (नचारीझा लदौर) सभक दुलारू हरिमोहनक विवाह सोलहम वर्षक अवस्थामे 1924 मे भऽ गेलनि जहिया ई मैट्रिकक छात्र छलाह । लोमा गामक निवासी निविष्ट पंडित सोनेलालझाक लोअर पास कन्या सुभद्राझासँ विवाहक पश्चात हरिमोहनक छात्र जीवन ओ दाम्पत्य जीवन संग-संग चलऽ लगलनि । 1927 मे हिनक दुरागमन भेलनि आ नववधू सुभद्रा लोमासँ बाजितपुर अयलीह । पढ़लि-लिखलि कनियाँकेँ सासुरमे कोन तरहेँ रहऽ पड़ैत छलनि तकर अनुभव हरिमोहनझाकेँ भेलनि आ कालान्तरमे हुनक यैह अनुभव हुनक साहित्यमे नारी स्वातन्त्र्यक पक्षधर बनल ।

हरिमोहनझा जखन 1930 मे एम.ए.मे पढ़ैत रहथि तखन हिनक प्रथम सन्तानक जन्म भेलनि । नवजात पुत्रीक नाम राखल गेलनि -फूलदाइ । 1946 मे एही फूलदाइक विवाह नेहरा (दरभंगा)क ओकील हरीन्द्रझाक सुपुत्र शैलेन्द्र मोहन झासँ भेलनि । ल.ना.मि.विश्वविद्यालयक पूर्व मैथिली विभागाध्यक्ष, मैथिलीक विश्रुत साहित्यकार ओ साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कारसँ सम्मानित डा. शैलेन्द्रमोहनझाक विशेष परिचय देबाक कोनो प्रयोजन नहि । एकरा प्रो०.हरिमोहनझाक सौभाग्ये कहबाक चाही जे अपन संस्कार, परिवेश ओ रूचिक अनुरूपेँ शैलेन्द्रमोहनझा सन सुयोग्य ओ यशस्वी जमाय भेटलथिन । सम्प्रति फूलदाइक दू गोट सुयोग्य बालक डा. अरुणकुमारझा (विभागाध्यक्ष अंग्रेजी विभाग ल.ना.मि.वि.) ओ वरूणकुमारझा (अभियन्ता) तथा एक गोट कन्या शान्ता (अमेरिका प्रवासिनी) अपन मातामहक कीर्तिकेँ अक्षुण्ण रखैत जीवनयापनमे लागल छथि । हरिमोहनझा जखन 1933मे पटनामे व्याख्याताक पदपर नियुक्त भेलाह तँ पटनामे स्थायी रूपसँ डेरा लेलनि आ पत्नी सुभद्राझा आ पुत्री फूलदाइकेँ संगे राखऽ लगलथिन । पटनाक परिवेशक अनुरूप बनयबाक हेतु हरिमोहनझा अपन पत्नीकेँ निरन्तर प्रोत्साहन ओ उत्साहवर्द्धन करैत रहलथिन । एही ठाम पटनामे 1934 मे हिनक जेठ पुत्र गोपालजी अर्थात् मैथिलीक प्रसिद्ध कथाकार श्रीराजमोहनझाक जन्म भेलनि । 1936 मे दोसर पुत्र लखनजी (स्व. कृष्णमोहनझा), 1940 मे तेसर पुत्र रमणजीक जन्म भेलनि । सबसँ

छोट ओ चारिम पुत्र भुवनजी (प्रो. मनमोहनझा)क जन्म 1949 मे भेलनि जे सम्प्रति सी.एम. कालेज दरभंगामे मनोविज्ञानक प्राध्यापक छथिन । अपन पितामह, पिता ओ जेठ भायक परम्परामे भुवनजी सेहो मैथिलीक सेवामे लागल रहैत छथि । समकालीन मैथिली कंथाक सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे भुवनजी अपन परिचित स्थापित कऽ चुकल छथि ।

1933 मे जहिया हरिमोहनझा पटना रहऽ अयलाह तँ अपन छोट भाय इन्द्रमोहनकेँ सेहो अपना संगे राखऽ लगलथिन । इन्द्रमोहनक विवाह 1939 मे सबौरक दुर्गादत्तझाक कन्या लक्ष्मीदेवीक संग भेलनि । इन्द्रमोहनकेँ एक पुत्र ललनजी आ तीन पुत्री भेलथिन । मुदा पाँचे वर्षक अवस्थामे 1947 मे ललजीक मृत्यु भऽ गेलनि । एकर बाद 1949 मे स्वयं इन्द्रमोहनजी एकटा दुर्घटनाक शिकार भऽ सबकेँ कनैत-बिलखैत छोड़ि एहि संसारसँ विदा भऽ गेलाह। पुत्र ओ पौत्रक मृत्युक आघातकेँ पं. जनार्दनझा जनसीदन नहि सहि सकलाह आ 20 जून 1951 केँ एहू साहित्य महारथीक निधन भऽ गेलनि ।

एकहि संग लगले-लागल ई अनेक दुर्घटना जेना प्रो. हरिमोहनझाकेँ झकझोड़ि देलकनि । मुदा एहनो विपत्ति कालमे अपन सहधर्मिणी सुभद्राक सम्बल पाबि प्रो. हरिमोहनझा धैर्य धारण कयने समस्त परिवारक दायित्व अपन कान्हपर लऽ लेलनि। गाम आ पटना दुनू ठामक बराबर ध्यान राखऽ लगलाह । अपन दुनू टा छोटकी भतीजी रत्ना ओ रमाकेँ अपना संगे पटनामे राखि दुनूक शिक्षा-दीक्षाक समुचित प्रबन्ध कयलनि । जेठ भतीजी रेणुक विवाह मढ़ेयाक धनेश्वरझाक संग भेलनि जे किछुए दिन बाद दिवंगता भऽ गेलथिन । मझिली भतीजी रत्नाक विवाह स्व. कलक्टर विश्वम्भरचौधरीक बालक विनयचौधरीसँ भेलनि । सबसँ छोट भतीजी रमाक विवाह इन्कमटैक्स कमिश्नर सीताराम झाक अनुज दयानन्दझाक संग भेलनि। सम्प्रति मुम्बइ निवासिनी डा. रमाझा अपन पितामह आ पितृत्त्वक परम्पराकेँ आगू बढ़बैत मुम्बइमे मैथिलीक अलख जगयबामे लागलि छथि । पछिला कतोक वर्षसँ हिनक सम्पादनमे मुम्बइसँ **मिथिला दर्पण**, पत्रिकाक प्रकाशन भऽ रहल अछि ।

एहि तरहेँ प्रो. हरिमोहनझा अपन समस्त दायित्वक कुशलतापूर्वक निर्वहण कयलनि । हिनक पत्नी सुभद्राझा सतत् हिनक अर्द्धांगिणीक भूमिकामे प्राणपणसँ लागल रहलथिन । प्रो. हरिमोहनझाक नारी स्वातन्त्र्यक चिन्तनधाराक अनुरूप सुभद्राझा खुलि कऽ सामाजिक-सांस्कृतिक आयोजन सबमे भाग लैत रहलथिन । पटना डेरापर निरन्तर आबऽवला साहित्यकार-प्रशंसक लोकनिक आतिथ्य सत्कार करैत रहलथिन। एतेक धरि जे मिथिलाक सामाजिक ओ अपन पारिवारिक परम्पराक विपरीत सुभद्राझा 1958 मे चेतना समिति, पटनाक मंचपर मंडनमिश्र नाटकमे भारतीक अभिनय कऽ

कऽ एकटा इतिहासे बना देलनि । आधुनिक मैथिली रंगमंचक इतिहासमे सुभद्राझा पहिल मैथिलानी भेलीह जे एतेक पैघ साहस देखौलनि।

1976 मे प्रो. हरिमोहनझा परिवारपर एकटा बड़ पैघ आघात भेलनि । हुनक प्राणप्रिय एकमात्र पौत्र दमनजी (रमणजीक बालक) मात्र छओ वर्षक अवस्थामे सबकेँ कनैत-बिलखैत छोड़ि विदा भऽ गेलथिन । ई दुर्घटना प्रो. हरिमोहनझा आ सुभद्राझाकेँ जेना भीतरसँ छहोछित्त कऽ देलकनि । दुनू गोटा ओछाओन धऽ लेलनि। यद्यपि प्रो. हरिमोहनझा स्वयं तँ नीके भेलाह मुदा पत्नी सुभद्राझा एहि आघातकेँ सहि नहि सकलथिन आ अन्ततः अपन पति केँ एहि संसारमे एसगर छोड़ि अगस्त 1982 मे विदा भऽ गेलथिन । सब दिन अपन सहधर्मिणीक कान्हक सहारा लऽ कऽ चलनिहार प्रो. हरिमोहनझा एकाकी भऽ गेलाह । शोक आ रोग हुनक जीवनकेँ दुर्भर बना देलकनि । अपन अन्तिम समयमे ओ पटना छोड़ि दरभंगा चल अयलाह जतऽ 23 फरवरी 1984 केँ ई अन्तिम साँस लैत अपन जीवन यात्रा पूर्ण कयलनि ।

साहित्यमे प्रवेश

हरिमोहनझाकेँ साहित्यिक रुचि ओ संस्कार तँ जेना जन्मजाते छलनि । हिनक नैसर्गिक प्रतिभाकेँ अपन विद्वान पिता जनार्दनझा जनसीदनक सान्निध्य और बेसी ऊर्वर आ बहुमुखी बनौलक । 1919 मे जखन जनसीदनजी मिथिला मिहिरक सम्पादक नियुक्त भऽ कऽ दरभंगा अयलाह तँ बालक हरिमोहनकेँ संगे अनलथिन। दरभंगाक साहित्यिक परिवेश ओ प्रचुर साहित्यिक कृतिक उपलब्धता हिनक साहित्यिक संस्कारक रंगकेँ औरो बेसी प्रगाढ़ कऽ देलकनि । बंकिम, शरद, रवीन्द्र, देवकीनन्दन खत्री आदिक रचनाकेँ पढ़बाक अवसर भेटलनि तँ मिहिरमे प्रकाशित जनसीदनजीक व्यंग्य-विनोदमय रचना **आधुनिक संन्यासी वा बाबा ढकोसलानन्द** एवं **पुनर्विवाह** उपन्यासक कतिपय हास्य-व्यंग्य प्रसंग बालक हरिमोहनकेँ बेस प्रभावित कयलकनि। हुनको मोनमे एहिना लिखबाक प्रेरणा जगलनि ।

पिताक लेखन शैलीक अनुकरण करबाक ई हुनक सेहन्ता पुनः दरभंगहिमे साकार भऽ सकलनि जखन 1929मे बी.ए.कयलाक बाद छात्र हरिमोहनकेँ एक साल अपन अध्ययनकेँ विराम देबऽ पड़लनि । दरभंगामे पुस्तक भंडारक अधिष्ठाता ओ मातृभाषाक अनन्य प्रेमी रामलोचनशरण हिनका एहि एक सालक सदुपयोग करबाक हेतु दरभंगा बजा लेलथिन । उदीयमान प्रतिभा सबकेँ प्रश्रय ओ प्रोत्साहन देनिहार रामलोचनशरणक आशीर्वाद ओ भंडारक साहित्यिक परिवेश हिनका की भेटलनि जेना हिनकर प्रतिभा आरि-धूरिकेँ तोड़ि अपन वास्तविक स्वरूप देखबऽ लागल । प्रथम तँ ई एहि अवधिमे रामलोचनशरणक आग्रहपर हिन्दी ओ संस्कृतमे **तीस दिनमे**

संस्कृत, तीस दिनमे अंग्रेजी, **संस्कृत रचना चन्द्रोदय**, **संस्कृत अनुवाद चन्द्रिका**, **रामकथा**, **कृष्णकथा** आदि सन कतोक छात्रोपयोगी पोथीक सुगम शैली ओ रोचक भाषामे रचना कयलनि जे बेस लोकप्रिय भेल आ छुहुक्का जकाँ उड़ैत रहल ताहि बलेँ ई प्रचुर अर्थोपार्जन सेहो कयलनि । मुदा हिनक साहित्यिक प्रतिभाकेँ सबसँ बेसी चिन्हलथिन बाबू भोलालालदास । ओ एहि उदीयमान हस्ताक्षरकेँ मैथिलीक दिस मोड़ि कऽ कोना अनलथिन से स्वयंमे एकटा ऐतिहासिक तथ्य अछि । ओहि समयमे पं. कुशेश्वर कुमर ओ बाबू भोलालालदासक संयुक्त सम्पादनमे पुस्तक भंडारक विद्यापति प्रेससँ **मिथिला** नामक पत्रिकाक प्रकाशनक सूर-सार भऽ रहल छल । भोलालालदास हरिमोहनझा सन विलक्षण प्रतिभाकेँ आग्रह कयलथिन जे ओ मिथिलाक हेतु किछु लिखि कऽ देथि । एहि आग्रहक अनुपालन करैत युवक हरिमोहनझा दूटा रचना तत्काल लिखि कऽ देलथिन- एकटा गद्य ओ दोसर पद्य । भोलाबाबूकेँ समकालीन सामाजिक समस्यापर आधारित ई दुनू रचना ततबा बेसी पसिन्न पड़लनि जे मिथिलाक पहिल अंक (सन् 1336, वैशाख)मे दुनूकेँ छापि देलथिन । हरिमोहनझाक ई दुनू रचना छनि गद्यमे **स्त्री शिक्षाक वर्त्तमान दशा** ओ पद्यमे **सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक** । तीक्ष्ण मर्मवेधी व्यंग्य करैत रोचक शैलीमे लिखित **स्त्री शिक्षाक वर्त्तमान दशामे** मिथिलाक नारी समुदायक कूपमण्डुकता ओ दुर्दशापूर्ण स्थितिक चित्रण अछि तँ **सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक**मे स्त्री समुदायकेँ सात परदाक भीतर दुर्दशाक खाधिमे डुबा कऽ रखनिहार सनातनी परम्पराक व्यक्ति तथा समाज सुधारकक बाना बना कऽ स्वयं बेटापर तिलक गनौनिहार, अछूतसँ घृणा कयनिहार विलायती वस्तुक प्रेमी सन द्वैध चरित्रवला लोकपर समधानि कऽ प्रहार कयल गेल अछि । एहि दुनू रचनाक संग हरिमोहनझाक मैथिलीमे प्रवेश भेलनि, एकटा लेखकक रूपमे हुनक परिचित बनलनि तँ हिनक यैह दुनू रचना हिनक भविष्यतकालीन साहित्यिक चिन्तनधाराक परिचय दऽ देलक । **मिथिलाक** पहिल अंकमे इहो सूचना देल गेल जे प्रत्रिकाक अग्रिम अंकमे हिनक **तीर्थयात्रा** प्रहसन प्रकाशित होयतनि । एहि ठाम एकटा बात औरो ध्यातव्य अछि जे पत्रिकाक सम्पादक भोलालालदास हरिमोहनझासँ ततबा बेसी प्रभावित भऽ गेल रहथि जे हुनक नामक आगाँ **पंडित** विशेषण जोड़ि कऽ उपर्युक्त सूचना देलथिन ।

मिथिलामे प्रकाशित हरिमोहनझाक ई दुनू रचना धूम मचा देलक । मैथिलीमे साहित्य लेखनक परम्परागत धाराक विपरीत छल ई दुनू रचना से तेना सन जेना केओ शान्त जबकल सरोवरमे ढेप फेकि ओकरा चंचल-तरंगित कऽ देने होअय । चारू कात अकानल जाय लागल जे के थिकाह ई – **पं. हरिमोहनझा बी.ए. (आनर्स)**। मिथिलाक अगिला अंकमे पूर्व सूचनाक अनुसार हरिमोहनझाक तीर्थयात्रा प्रहसन नहि

प्रकाशित भऽ ओकरा स्थान पर प्रकाशित भेल मैथिली साहित्यक ऐतिहासिक चमत्कारिक कृति **कन्यादानक** प्रथम परिच्छेद । एकरा संगहि हिनक एकटा औरो पद्य रचना **कन्याक नीलामी डाक** सेहो प्रकाशित भेल जकर रचयिताक नामक संग एहि अंकमे एकटा औरो उपाधि जोड़ल देखल गेल -**मैथिली साहित्यालंकार** । भोलालालदास अपन सम्पादकीयमे एहि **उपाधि प्रदानक** सूचना एहि रूपें देलनि - **हर्षक विषय थिक जे मिथिलाक सुयोग्य रत्न श्री पं. हरिमोहनझा बी.ए. (आनर्स)कें मुजफ्फरपुरक मैथिल छात्र समिति मैथिली साहित्यालंकारक उपाधि प्रदान कैने छैन्ह । उक्त पं. हरिमोहनझाजीसँ मिथिलाक पाठक परिचिते छथि । अहू अंकमे हुनक कन्यादान वला लेख जा रहल छैन्ह । यद्यपि पूर्व सूचनाक अनुसार हुनका तीर्थयात्राक लेख तैयार छलैन्ह तथापि हमरा लोकनिक आग्रहसँ एहि बेर कन्यादाने लिखऽ पड़लैन्ह । छात्रक योग्यतासँ श्रीझाजी जे फल प्राप्त कैने छथि से सम्पूर्ण बिहारमे प्रख्यात अछि। हुनका हिन्दी काव्यहुक योग्यतासँ एहि बेर हिन्दी साहित्य सम्मेलन बड़ प्रसन्न भेल । झाजीमे कतोक भाषाक गद्य-पद्य लिखबाक असाधारण योग्यता छैन्ह । हम एहि पुरस्कारपर परम प्रसन्न छी एवं हुनक अभ्युन्नति हृदयसँ चाहै छी । हम वस्तुतः हुनका सम्पूर्ण भारतमे प्रख्यात देखै चाहै छी ।**

उपर्युक्त सम्पादकीय अंशसँ स्पष्ट अछि जे भोलालालदासक आग्रहपर बिना कोनो उपन्यासक खाका बनौने मात्र अपन छोट बहिनिक विवाहक तैयारी देखि हरिमोहनझा **कन्यादानक** न्यों रखलनि । सम्पादक भोलालालदासक दृष्टिमे तखनहुँ कन्यादान एकटा लेख मात्र छल । मुदा गप्पे-गप्पमे लेखक रूपमे लिखित कन्यादान आगाँ चलि कऽ मैथिली भाषाक युगान्तरकारी कृति सिद्ध भेल अपितु ई कृति हरिमोहनेझाकें मैथिलीक सीमासँ बाहर अखिल भारतीय ख्याति प्रदान कयलकनि । जाहि बातक भविष्यवाणी भोलालालदास भावुकतामे किंवा हिनक लेखनीक शक्तिसँ विमुग्ध भऽ कऽ कयलनि से आगाँ चलि सद्यः चरितार्थ भेल । कहलो गेल छैक जे - वृथा न जाय देव-ऋषि वाणी ।

भोलाबाबू एहि पत्रिकाक सम्पादन कार्यमे ओ एकरा सुरूचिपूर्ण बनयबामे सेहो हरिमोहनझाक सहायता लेबऽ लगलाह ताहू बातक सूचना मिथिलाक दोसर अंकमे ओ देने छथि - **मिथिलाक सम्पादनमे हमरा लोकनि वस्तुतः बहुत पश्चात्पद छी । विशेषतः एहि अंकमे श्रीयुत् पं. कुशेश्वर कुमरजी अपना एक कन्याक स्वर्गीया भेने सम्पादनमे भाग लेबासँ प्रायः अक्षम रहलाह । हमहूँ स्त्रीक चिररोगिणी रहबाक कारणें यथोचित मनोयोग नहि दै सकलहुँ । तथापि प्रेस समीपमे अछि एवं श्रीयुत पं. हरिमोहनझाजी सन योग्य व्यक्ति सम्प्रति पुस्तके भंडारमे छथि। अतः हुनकहुसँ बहुत किछु सहायता पाओल अछि । अन्यथा पत्रिका एहू रूपमे प्रकाशित नहि भै सकैत । यस्मात् हम हुनका हार्दिक धन्यवाद दै छिऐन्ह और प्रार्थना करै छिऐन्ह जे सब ठामसँ ओ मिथिलाक प्रति यैह दयादृष्टि बनौने राखथि ।"**

मिथिलाकेँ शुष्क शास्त्रीय चर्चासँ उबारि हरिमोहनझा ओकरा कोना सब वर्गक पाठकक हेतु पठनीय बनौलनि तकर प्रमाण ई दोसर अंक दैत अछि । पत्रिकामे **महिला मनोरञ्जन** नामसँ स्तम्भ देल गेल जाहिमे हरिमोहनझाक नववधू-पत्नी सुभद्रादेवीक दू गोट रचना **पाक विज्ञान** आ **सिखवा योग्य लूरि** प्रकाशित भेल तँ **बाल मनोरंजन** नामक स्तम्भमे हरिमोहनझा स्वयं **पं. ठक्कनझाक** छद्म नामसँ किछु रोचक चुटुक्का लिखलनि ।

मिथिलाक तेसर अंकमे कन्यादानक अग्रिम अंश तँ प्रकाशित भेल संगहि उपरिवर्णित दुहू नवीन स्तम्भमे सुभद्रादेवी ओ पं. ठक्कनझाकेँ पुनः पढ़बाक अवसर पाठक लोकनिकेँ भेटलनि । मिथिलाक चारिम अंकमे कोनो कारणवश ने तँ कन्यादानक अग्रिम अंश आयल ने ओ दुनू नवीन स्तम्भे देखल गेल । पाँचम अंकमे कन्यादानक अग्रिम अंश प्रकाशित भेल । छठम अंकमे **तार कोना पढ़ाओल गेल** शीर्षकसँ कन्यादानक प्रकाशन जारी रहल । मुदा सातम अंकमे कन्यादानक अगिला अंश तँ नहिए आयल अपितु कन्यादानमे व्यक्त विचार ओ एकर वर्णन शैलीपर आपत्ति देखबैत एहि अंकमे म.म.मुरलीधरझाक एकगोट प्रतिक्रिया प्रकाशित भेल । एही संग हरिमोहनझाक रचनामे व्यक्त हुनक परिवर्त्तनकामी विचारधाराक पक्ष-विपक्षमे विभिन्न व्यक्तिक प्रतिक्रिया सब आबऽ लागल । एकरा हरिमोहनझाक लेखनीक सफलता कहबाक चाही जे हुनक चिन्तनधारासँ समाज अवगत भेल आ एकटा आत्मचिन्तनक पक्रिया भितरे-भीतर सुरू भऽ गेल जकर प्रतिध्वनि **मिथिलाक** आगामी अंक सबमे सुनाय पड़ऽ लागल ।

एक सालक दरभंगा निवास ओ **मिथिला** पत्रिका हरिमोहनझाकेँ ततबा प्रसिद्ध बना देलकनि, ओ हिनक **कन्यादान** पाठकक हृदयपटल पर जा कऽ तेना ने खचित भऽ गेलैक जे चारू कातसँ हिनका कन्यादानकेँ पूरा करबाक आग्रह पर आग्रह कयल जाय लगलनि । समकालीन कोनो मैथिली पत्र-पत्रिकामे हरिमोहनझाक रचना प्रकाशित होयब जेना परमावश्यक मानल जाय लागल । एहि तरहेँ बहुत कम समयमे हरिमोहनझा नहि केवल मैथिलीक शीर्षस्थ साहित्यकार बनि गेलाह अपितु हिनक लोकप्रियता क्रमशः बढ़िते चल गेलनि आ वर्त्तमानहुँ समयमे ई सर्वाधिक पठनीय साहित्यकार छथि । 1929 मे दरभंगामे ई मैथिली सेवाक जे संकल्प लेलनि तकर निर्वाह अपन जीवनक अन्तिम समय धरि कयलनि । अपन जीवनक अन्तिम रचना सेहो ई 1982 मे **ओ दरभंगा : ई दरभंगा** शीर्षकसँ दरभंगहिमे लिखलनि जे दैनिक **स्वदेशमे** प्रकाशित भेल छल ।

कृति परिचय

प्रो. हरिमोहनझा मैथिली लेखकक स्वभावक अनुरूप बहुविधावादी छलाह ।

ई स्वेच्छया किंवा फरमाइसपर साहित्यक विभिन्न विधामे लेखन कयलनि । कथा हिनकर मुख्य विधा अवश्य छलनि मुदा ताही संगे उपन्यास, शास्त्रार्थीय गप्प साहित्य, मनोरंजक गप्प साहित्य, एकांकी, कविता सब क्षेत्रमे ई तहिना कलमक कमाल देखौलनि । एहिसँ इतर हिनक किछु महत्त्वपूर्ण सम्पादन, किछु दर्शन शास्त्राधारित लेख, किछु समीक्षा-समालोचना, किछु भूमिका, किछु भाषण आ किछु बाल साहित्यपरक रचना ओ पोथी सब सेहो छनि । तथापि हिनक जे पुस्तकाकार कृति सब छनि तकर संक्षिप्त परिचय नीचाँ देल जा रहल अछि –

1. **कन्यादान** – 1929मे **मिथिला** पत्रिकामे एहि उपन्यासक पेनी तँ छानि देल गेल मुदा कतिपय कारणसँ एकर गाड़ी आगाँ नहि बढ़ि सकल । पछाति प्रो. हरिमोहनझाक पाठक ओ प्रशंसक लोकनिक ततबा आग्रह भेल जे हिनका एहि उपन्यासकेँ पूरा करऽ पड़लनि आ 1933 इ. मे ई पुस्तक भंडारसँ प्रकाशित भेल । मिथिलाक वैवाहिक समस्या, अनमेल विवाह, अशिक्षा आदि सन समस्याकेँ केन्द्रमे राखि लिखल गेल एहि उपन्यासक नायिका बुच्चीदाइ सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक अमर पात्री बनि गेलीह । हास्यक आवरणमे लेपटायल बुच्चीदाइ अर्थात् मिथिलाक बेटीक कारुणिक स्थितिकेँ जाहि कुशलताक संग एहि उपन्यासमे चित्रित कयल गेल अछि ओ आइयो पाठककेँ हँसबैत-हँसबैत कना दैत अछि । मैथिलीमे श्रेण्य साहित्यक गरिमा प्राप्त कन्यादान एहन कृति साबित भेल जकरा पढ़बाक हेतु अमैथिली भाषी लोकनि मैथिली सिखलनि । कन्यादान मैथिलीमे एकटा चमत्कार सिद्ध भेल जे विद्यापतिक बाद बीसम शताब्दीमे एहि भाषाकेँ राष्ट्रिय स्तरपर चिन्हार बनौलक ।

2. **द्विरागमन** – कन्यादानमे बुच्चीदाइ सन अपढ़ कनियाँकेँ छोड़ि कऽ हुनक वर सी.सी.मिश्रा पड़ा जाइत छथिन । बुच्चीदाइक ई अवस्था मैथिलीक पाठककेँ उद्वेलित कऽ कऽ राखि देलकैक । बुच्चीदाइक सृष्टिकर्त्ता प्रो. हरिमोहनझापर पुनः पाठक लोकनिक दबाब पड़ऽ लगलनि जे ओ बुच्चीदाइ सन निम्मूधनकेँ एना बीच मँझधारमे नहि छोड़थुन । मिथिलाक आने बेटी जकाँ बुच्चीदाइक दाम्पत्य जीवन फेरसँ पटरीपर आबउन तकर उपाय ओ करथु । अपन प्रशंसक लोकनिक एहि आग्रहपर प्रो. हरिमोहनझा कन्यादानक दोसर भागक प्रणयन **द्विरागमन** नामसँ कयलनि जे 1943मे पुस्तक भंडारसँ प्रकाशित भेल । एहिमे अशिक्षिता बुच्चीदाइकेँ हुनक पतिक इच्छाक अनुरूप पढ़ा-लिखा, विभिन्न ज्ञानमे पारंगत करा अप-टू-डेट लेडी बनाओल जाइत छनि तखन हुनक द्विरागमन होइत छनि । यद्यपि द्विरागमनमे ओ सहजता नहि अछि जे कन्यादानमे अछि । द्विरागमनमे किछु नाटकीयता आबि गेल अछि । मुदा ई खण्ड कन्यादानक पूरक बनि एकरा सुखान्त बना दैत अछि, संगहि इहो सन्देश दैत अछि जे विवाहक बादो मिथिलाक नारीकेँ शिक्षित कयल जा सकैत

छनि । प्रो. हरिमोहनझाक एहि दुहू औपन्यासिक कृतिकेँ मिला कऽ एहिपर फिल्म सेहो बनाओल गेल ।

3. **प्रणम्य देवता** – ई हिनक हास्य-व्यंग्यपरक गल्पक संग्रह थिकनि जकर प्रकाशन 1945 मे पुस्तक भंडारसँ भेल । एकर प्राक्कथन कुमार गंगानन्दसिंहक लिखल थिकनि । एहि सचित्र-संग्रहमे एगारह गोट गल्प क्रमशः **विकट पाहुन, आदर्श कुटुम्ब, साझी आश्रम, घरजमाय, धर्मशास्त्र, फलित ज्योतिष, पंडितजी, कविजी, भदेशक नमूना, आधुनिक पत्नी** ओ **अङरेजिया ब.बू** अछि । एहि संग्रहक गल्पमे समाज ओ जीवनक विभिन्न क्षेत्रसँ ताकि कऽ आनल एगारह गोट पात्रक विनोदपूर्ण चित्रण कयल गेल अछि जे लोकनि वास्तवमे प्रणम्य छथि । एहिमे सनातन परम्परापर आँखि मूनि विश्वास कयनिहारसँ लऽ कऽ अपन संस्कृतिकेँ छोड़ि अङरेजियाबाबू बनबाक हास्यास्पद प्रयास कयनिहार व्यक्तिपर कटु व्यंग्यक प्रहार कयल गेल अछि तँ दोसर दिस मिथिलामे तिलक-दहेजक समस्या, साझी आश्रमक दारुण स्थितिक जे त्रासद चित्रण कयल गेल अछि से पाठककेँ सोचबाक लेल विवश कऽ दैत अछि ।

4. **रंगशाला** – इहो रसमय कथाक संग्रह थिकनि जकर प्रकाशन 1949 मे पुस्तक भंडार पटनासँ भेल छल । एहिमे पन्द्रह गोट कथा आ दू गोट प्रहसन अछि । एहि संग्रहमे विभिन्न टिपिकल चरित्रपर अपन हास्यमयी ऊर्वर कल्पनाक रंग चढ़ा कथाकार ओकर रोचक ढंगसँ प्रस्तुत कयने छथि । शीर्षक कथा **रंगशालाक** बमबाबू होथि की **दरोगाजीक मोछक** दरोगाजी सब चरित्र अद्भुते अछि जे हास्यक वर्षा करैत अछि । एहि संग्रहक किछु कथा जेना **रेलक अनुभव** ओ **कन्याक जीवन** संग्रहक अन्य कथासँ सर्वथा भिन्न चरित्रक अछि जे मिथिलाक स्थितिपर आइयो आत्मविश्लेषण करबाक हेतु विवश करैत अछि । एहि संग्रहमे **बौआक दाम** ओ **महाराज विजय** प्रहसन अछि जे पाठ्य काव्यक संग-संग दृश्य काव्य सेहो थिक । एकरा मंचपर सेहो अभिनयक द्वारा प्रदर्शित कयल जा सकैत अछि ।

5. **खट्टरककाक तरंग** – प्रो. हरिमोहनझाक ई कृति एकटा फराके विधाक सृष्टि कयलक जकरा **शास्त्रार्थीय गप्पक** संज्ञा देल जा सकैछ । हिनक ई कृति जतबे चर्चित भेल ततबे विवादित । अद्भुत प्रकारक पात्र गढ़बामे माहिर प्रो. हरिमोहनझाक लेखनीसँ 1948 मे खट्टरककाक सृष्टि भेल जखन भाङक प्रेमी, विनोदप्रिय खट्टरककाक पहिल तरंग **माछ** शीर्षकसँ आचार्य सुमन द्वारा सम्पादित मैथिली मासिक **स्वदेशमे** प्रकाशित भेल । 1948 मे बारह गोट तरंगक संग जहिना खट्टरककाक तरंगक पहिल संस्करण प्रकाशित भेल की मिथिलाक सनातनी-परम्परावादी समुदायमे हरविर्रो मचि गेल । खट्टरककाक अपन भाङक निशाँमे जेना समस्त शास्त्र-पुराणक धज्जी उड़बऽ

लगलाह से देखि परम्परामे आस्था रखनिहार समुदायक भृकुटि तनि गेल । 1954 मे **मिथिला मिहिर**मे जनवरीसँ लऽ कऽ नवम्बर धरि खट्टरककाकेँ लऽ कऽ जे विवाद सुरू भेल ताहिमे प्रो. हरिमोहनझाक कोनो दशा बाँकी नहि राखल गेलनि । खट्टरककाक कारणेँ एकर लेखककेँ नास्तिक, परम्पराद्रोही, भारतीय सभ्यताक विरोधी, पश्चिमी सभ्यताक अनुगामी आदि की-की ने कहल गेलनि तँ खट्टरोककाक दिससँ एकर लेखक सहित हुनक पक्षधर लोकनि जबाब देबऽमे पाछाँ नहि रहलथिन। ई विवाद जँ खट्टरककाकेँ अमर बना देलकनि तँ एकबेर पुनः स्वतन्त्र भारतमे मैथिल समाजकेँ अपन स्थितपर आत्म मंथन करबाक हेतु विवश कयलक । 1954 मे **खट्टरककाक** तरंगक दोसर संस्करण बहरायल जाहिमे तरंगक संख्या बढ़ि कऽ चौबीस भऽ गेल । एकर तेसर संस्करण 1967मे भारती भवन पटनासँ प्रकाशित भेल जाहिमे सब मिलाय तीसटा तरंग अछि । इहो कृति प्रो. हरिमोहनझाकेँ अजस्र ख्याति प्रदान कयलकनि । ई कृति देखा देलक जे एकर रचयिता मात्र हास्यरसाचार्य ओ व्यंग्यसम्राटे नहि प्रत्युत विभिन्न शास्त्रक गम्भीर अध्येता ओ अद्‌भुत तर्कवादी सेहो छथि जकर काट किनको लगमे नहि छनि । भंगक तरंगमे समस्त वेद-वेदांग, शास्त्र-पुराण, आचार-विचारकेँ मिथ्या सिद्ध कयनिहार खट्टरककाक चरित्रक परिचय एहि पक्तिसँ भेटि जाइत अछि- **एहि देशमे मूर्खताक कारण के? पंडित । असली ब्राह्मण कतय छथि ? यूरोप-अमेरिकामे । वेदकर्ता नास्तिक छलाह । पुराण सुनने स्त्रीगण दूरि भऽ जाथि । गीता पाठसँ फौजदारी बढ़ि जायत । आयुर्वेद काव्य थिक। दही-चूड़ा-चीनीसँ सांख्या दर्शन बहरायल । सोमरस भाङ थिक । महादेव मैथिल छलाह । रामायणमे आदर्श चरित्र कोन ? रावण । सभ देवतामे तेज के ? कामदेव। स्त्री जातिमे सर्वश्रेष्ठ के ? वारांगना । स्वर्ग गेने धर्म नष्ट भऽ जाय । भगवानकेँ पेन्सन लऽ कऽ बैसक चाहिऐन्ह ।**

6. **तीर्थयात्रा** - ई हिनक एकमात्र कथा तीर्थयात्राक पाकेट साइज संस्करण थिकनि जे 1953 मे वैदेही समिति दरभंगा द्वारा प्रकाशित भेल छल । सम्भवतः प्रो. हरिमोहनझाक ई वैह कथा थिकनि जकर लेखन ओ 1929 मे अपन छात्र जीवन कालमे कयने रहथि आ जकरा **मिथिलाक** दोसर अंकमे प्रकाशित कयल जयबाक सूचना देल गेल छल ।

7. **चर्चरी** - ई विविध विधाक संग्रह थिकनि जकर प्रकाशन 1960 मे मैथिली प्रकाशन कलकत्ता द्वारा कयल गेल छल । एहि संग्रहमे तेरह गोट कथा अछि । प्रो. हरिमोहनझाक कथा साहित्यमे मास्टर पीसक गरिमा प्राप्त कथा **पाँच पत्र** एही संग्रहमे आयल छनि जाहिमे मात्र पाँच गोट पत्रमे सम्पूर्ण जीवनकेँ, जीवनक समस्त आरोह-अवरोहकेँ अत्यन्त कौशलक संग चित्रित कयल गेल अछि । प्रो. हरिमोहनझाक

निविष्ट एकांकीकारो छलाह आ खट्टरककाक चरित्रक विपरीत मिथिलाक प्राचीन संस्कृतिक ओ मैथिल महापुरुष लोकनिक प्रति हुनक हृदयमे कोन तरहक सम्मानक भाव छलनि तकर प्रमाण थिक एहि संग्रहमे संकलित हिनक दू गोट एकांकी **अयाचीमिश्र** ओ **मंडनमिश्र** । एकर अतिरिक्त एहि संग्रहमे एकटा छाया रूपक, एकटा पत्रात्मक रचना, **भोलबाबाक गप्प, रेलक झगड़ा** प्रहसन ओ खट्टरककाक तीन गोट तरंग संकलित अछि । इहो पोथी पाठककेँ एकहि संग विभिन्न विधाक आस्वाद प्रदान करैत अछि ।

8. **एकादशी** – ई हिनक एगारह गोट कथाक संग्रह थिकनि । एहि संग्रहक अधिकांश कथा चर्चरीसँ लेल गेल अछि ।

9. **जीवन यात्रा** – ई हिनक आत्मकथा ओ हिनक अन्तिम कृति थिकनि जकर प्रकाशन हिनक मृत्युक बाद 1984मे मैथिली अकादमीसँ भेल । एहि पोथीपर मृत्यूपरान्त 1986 मे हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । एहि पोथीमे प्रो. हरिमोहनझा अपन बाल्यावस्थासँ लऽ कऽ अपन छात्रजीवन, पुस्तक भंडार, प्राध्यापक जीवन, आदि अतीत प्रसंगक रोचक विवरण देने छथि । एहि पोथीक परिशिष्टमे अपन पत्नी सुभद्राझाक मृत्यूपरान्त लिखल गेल **पुष्पांजलि** ओ हुनका सम्बोधित **अन्तिम पत्र** अछि जे अत्यन्त मार्मिक ओ कारुणिक अछि । हास्य रसावतार प्रो. हरिमोहनझाक एकटा फराके छवि हुनक एहि दुनू रचनामे देखबामे अबैत अछि जे पाठककेँ करुण रसक उद्रेक करा दैत अछि ।

10. **बीछल कथा : हरिमोहनझा** – प्रो. हरिमोहनझाक तीस गोट बीछल कथाक संग्रह 1999 मे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित कयल गेल। एकर सम्पादन राजमोहनझा आ सुभाषचन्द्र यादव कयने छथि । एहि संग्रहक कथा प्रो. हरिमोहनझाक कथाकारकेँ समग्रताक संग उपस्थित करैत अछि जे हिनक कथामे मात्र हास्य व्यंग्येटा नहि छनि वैचारिकता ओ कारुणिकता सेहो ततबे मात्रामे छनि । ई संग्रह हिनका **गल्पसम्राटक** रूपमे प्रतिष्ठापित करैत अछि ।

प्रो. हरिमोहनझाक जेहने गद्य रसगर होइत छलनि तेहने हिनक पद्य सेहो चोटगर होइत छलनि । विभिन्न अवसरपर ई कविता सेहो लिखैत रहलाह । यद्यपि हिनक कविताक कोनो संग्रह हिनक जीवनकालमे प्रकाशित नहि भऽ सकलनि, मुदा हिनक मृत्युक पश्चात् हिनक सुयोग्य साहित्यकार पुत्र श्रीराजमोहनझा **आरंभक** एक गोट अंकमे हिनक अधिकांश कविताकेँ प्रकाशित करौलनि अछि । हिनक **ढालाझा, टी पार्टी, निरसन मामा, घूटरकाका, अंगरेजिया लड़कीक समदाउन** आदि प्रसिद्ध कविता छनि । अपन गद्यक सदृशहि अपन पद्यहुमे प्रो. हरिमोहनझा मिथिलाक

सामाजिक विसंगति, आत्मघाती पुरातनप्रियता आदिपर निर्ममतापूर्वक चोट कयने छथि जे ककरो तिलमिलबैत अछि तँ ककरो गुदगुदबैत अछि ।

उपसंहार

निष्कर्षतः प्रो. हरिमोहनझाक समस्त जीवन ओ कृतित्त्वक सम्बन्धमे यैह कहल जा सकैत अछि जे अपन प्रतिभा और संघर्षक बलपर ओ जीवनमे निरन्तर आगू बढ़ैत रहलाह । एकटा आदर्श पुत्र, एकटा आदर्श पिता, एकटा आदर्श अभिभावक, एकटा आदर्श पति, एकटा आदर्श शिक्षकक दायित्वक निर्वहन ई इमानदारीपूर्वक करैत रहलाह । साहित्य लेखन हिनकालेल कोनो रजनी-सजनीक खेल वा स्वान्तः सुखायवला वृत्ति नहि छलनि । साहित्य हिनकालेल साधना छलनि जकर उद्देश्य मिथिलाक सामाजिक परिवर्त्तन, स्त्री शिक्षाक प्रचार, बौद्धिकता ओ तार्किकताक विकास करब छलनि । अपन चिन्तनकेँ सामान्य जनसमुदाय धरि पहुँचयबाकलेल ओ हास्य व्यंग्यक आश्रय लेलनि जाहि कारणेँ हुनक विचार सहज ढंगसँ पाठक वर्ग धरि सम्प्रेषित भेल आ भऽ रहल अछि । प्रो. हरिमोहनझाक कहियो अपनाकेँ कोनो वादमे आवृत्त नहि कयलनि, कोनो विचारधारा विशेषक झण्डा नहि उघलनि। हुनक प्रथम ओ अन्तिम उद्देश्य छलनि मैथिली भाषा-साहित्यकेँ नवीन संस्कार प्रदान करब, बीसम शताब्दीमे एकर अभिनव परिचिति स्थापित करब, साहित्य सेहो सामाजिक परिवर्त्तनक माध्यम बनि सकैछ से सामर्थ्य मैथिलीमे उत्पन्न करब । प्रो. हरिमोहनझा अपन एहि उद्देश्यमे सफल रहलाह । अपना जीवितहि अवस्थामे मिथकीय पुरुष बनि गेनिहार, मैथिली गद्यक अभिनव विद्यापति प्रो. हरिमोहनझा आधुनिक मैथिली भाषा - साहित्यक प्रतिष्ठापकक रूपमे चिर काल धरि जानल जाइत रहताह, अमर बनल रहताह ।